International Journal of Innovations in Research
ISSN: 3048-9369 (Online)

चरित्र निर्माण में भारतीय ज्ञान परंपरा की भूमिका

प्रो. प्रियंका चंगोड
सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
श्री राजेन्द्र सुरि शासकीय महाविद्यालय
सरदारपुर, धार(म.प्र.) **भारत**
ईमेल आईडी: pinuchangod99@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19222738

सारांश : भारतीय ज्ञान परंपरा का विकास मानव जीवन की समग्र आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर हुआ है, जिसका उद्देश्य केवल बौद्धिक ज्ञान प्रदान करना नहीं , बल्कि नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास को सुनिश्चित करना है। सत्य और धर्म जैसे मूल्य इसकी आधारशिला हैं , जो व्यक्ति और समाज को संतुलित दिशा प्रदान करते हैं। इस परंपरा में शिक्षा को जीवन-मूल्यों से जोड़कर देखा गया है , जहाँ ज्ञान का उद्देश्य चरित्र निर्माण , सामाजिक उत्तरदायित्व तथा समग्र मानवीय विकास है। प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रमुख अवधारणाओं और आधुनिक शिक्षा व समाज में उनकी प्रासंगिकता का संक्षिप्त विश्लेषण किया गया है।

कुंजी शब्द *– ज्ञान परंपरा, चरित्रवान, कर्तव्यनिष्ठ, आध्यात्मिक, आत्मनियंत्रण, आचरण अनुशासन।*

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा वह सतत और समग्र ज्ञान व्यवस्था है, जो प्राचीन काल से भारत में विकसित होती रही है। यह परंपरा ज्ञान को केवल बौद्धिक जानकारी नहीं, बल्कि जीवन को नैतिक, संतुलित और सार्थक बनाने का माध्यम मानती है। इसमें ज्ञान का संरक्षण एवं प्रसार वेद, उपनिषद, शास्त्रों के साथ–साथ सामाजिक आचरण और परंपराओं के माध्यम से हुआ है। भारतीय ज्ञान परंपरा व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच सामंजस्य स्थापित करने पर बल देती है।

चरित्र निर्माण का अर्थ

चरित्र निर्माण का अर्थ है–मनुष्य क भीतर अच्छे गुणो का विकास करना। जैसे– सच्चाई, ईमानदारी, संयम, दया, अनुशासन, सेवाभाव, कर्तव्यनिष्ठा, करूणा, आत्मनियंत्रण आदि। हमारे यहां चरित्र के विषय में कहा गया है कि हम जो छोटे–छोटे कार्य दैनिक जीवन में करते है उनका समूह ही चरित्र है। किसी से मिलने पर अभिवादन करना है या नही, बातचीत कैसे करना है। कोई उससे मिलकर आकर्षित होता है या विकर्षित? सहकार या सरोकार की भावना है या नहीं इत्यादि–इत्यादि।

ये छोटी–छोटी बाते ही चरित्र की परिचायक होती है। तैतरीय उपनिषद में भी चरित्रवान बनने के लिए कहा गया है। वशिष्ठ स्मृति में भी कहा गया है कि "आचारहीनं न पुनन्ति वेदा" अर्थात आचारहीन का वेद भी उद्धार नही कर सकते है।

Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)

"आचारः परमो धर्मः।"—मनुस्मृति
अच्छा आचरण ही सबसे बड़ा धर्म है।
(अर्थात् चरित्र ही धर्म की असली पहचान है।)

"धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।"—महाभारत
जो धर्म से रहित है, वह पशु के समान है।
(अर्थात् बिना चरित्र के मनुष्य और पशु में फर्क नहीं है।)

भारतीय ज्ञान परंपरा में चरित्र निर्माण पर अत्यधिक जोर क्यो?

इसे हम संक्षेप में समझने की कोशिश करेंगे—भारतीय ज्ञान परंपरा में चरित्र निर्माण पर अत्यधिक जोर इसलिए दिया गया हैं क्योंकि भारत में पढ़ाई का मतलब केवल किताबे याद करना या नौकरी पाना नही बल्कि अच्छा इंसान बनना है क्योकि अगर मनुष्य का चरित्र सही नही है, तो उसका ज्ञान समाज के लिए हानिकारक भी बन सकता है।

मुख्य कारण—

- **ज्ञान को आचरण से जोड़ना**
  भारतीय परंपरा में कहा गया है कि "ज्ञान वही हैं जो जीवन में उतरे।"
  अगर व्यक्ति पढ़ा लिखा हैं लेकिन उसका व्यवहार अच्छा नही है ता वह ज्ञान अधूरा माना जाता है,इसलिए चरित्र को ज्ञान से ऊपर रखा गया।
- **समाज की शुद्धता के लिए**
  भारत में यह विश्वास था कि समाज अच्छा तभी बनेगा जब व्यक्ति अच्छा होगा और व्यक्ति अच्छा तभी बनेगा जब उसका चरित्र मजबूत होगा।
- **धर्म की अवधारणा**
  यहा धर्म का अर्थ **पूजा—पाठ** नहीं बल्कि **कर्तव्य,सत्य,न्याय** और **नैतिकता** है।इसलिए चरित्र निर्माण को धर्म का आधार माना गया है।
- **कर्म सिद्धांत**
  गीता और उपनिषद कहते है कि मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही बनता है। इसलिए चरित्र निर्माण को जीवन की दिशा तय करने वाला माना गया।
- **गुरू—शिष्य परंपरा**
  भारतोय शिक्षा में गुरू स्वयं आदर्श होता था। शिष्य किताबो से कम, **गुरू के आचरण से ज्यादा सीखता था।**
- **भौतिकता से संतुलन**
  भारत ने कभी भी भौतिक विकास को नकारा नहीं, पर उसे चरित्र के अधीन रखा क्योंकि बिना चरित्र के भौतिक प्रगति विनाशकारी बन सकती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में चरित्र निर्माण पर अत्यधिक जोर इसलिए दिया गया क्योंकि यहा ज्ञान का उद्धेश्य केवल बोद्धिक विकास नहीं बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति था।

चरित्र निर्माण के प्रमुख तत्व

- **सत्य** (सत्य बोलना और सच पर चलना)

Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)

- **धर्म** (कर्तव्य और नैतिकता का पालन)
- **संयम** (इंद्रियो और मन पर नियंत्रण
- **अनुशासन** (नियमित और मर्यादित जीवन)
- **करूणा** (दुसरो के प्रति दया और सहानुभूति)
- **सेवाभाव** (समाज के लिए कुछ करना)
- **आत्मसम्मान** (अपने मूल्यो पर अडिग रहना)
- **सहनशीलता** (धैर्य और क्षमा)
- **सादगी** (दिखावे से दूर रहना)
- **कर्तव्यनिष्ठा** (अपने काम को ईमानदारी से करना)

आज के समय में प्रासंगिकता

वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों का ह्रास, भ्रष्टाचार, स्वार्थ, सामाजिक असहिष्णुता और युवाओ में दिशाहीनता जैसी समस्याए बढ़ रही है। ऐसी स्थिती में भारतीय ज्ञान परंपरा चरित्र निर्माण के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। मूल्य आधारित शिक्षा से ही समाज में अनुशासन, सहिष्णुता और जिम्मेदारी की भावना विकसित की जा सकती है। केवल डिग्री और नौकरी से समाज नही सुधरता बल्कि अच्छे संस्कारो से सुधरता है।

नई शिक्षा नीति 2020 में चरित्र निर्माण

नई शिक्षा नीति 2020 यह मानती है कि पढ़ाई का मतलब सिर्फ किताबे याद करना नहीं है बल्कि बच्चो को अच्छा इंसान बनाना है। बच्चो में सच्चाई, ईमानदारी, अनुशासन, दुसरो की इज्जत करना और जिम्मेदारी समझना भी उतना ही जरूरी है जितना पढना–लिखना।
यह नीति कहती है कि शिक्षक केवल पढ़ाने वाले नहीं, बल्कि सही रास्ता दिखाने वाले हों।

निष्कर्ष

चरित्र निर्माण भारतीय ज्ञान परंपरा की आत्मा है। ज्ञान नैतिकता और आचरण का समन्वय ही व्यक्ति को पूर्ण बनाता है। दैनिक जीवन में मूल्यों का पालन कर और शिक्षा के माध्यम से चरित्र निर्माण को सशक्त बनाकर एक स्वस्थ, सभ्य और समृद्ध समाज कर निर्माण किया जा सकता है।

"सा विद्या या विमुक्तये"–उपनिषद

सच्ची विद्या वही है जो व्यक्ति को श्रेष्ठ आचरण की और ले जाए।

सन्दर्भ सूची:–

1. भारतीय ज्ञान परंपरा–मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी,भोपाल।
2. हिन्दी भाषा और संस्कृति।
3. उपनिषद।
4. राधाकृष्णन,डॉ.सर्वपल्ली– भारतीय दर्शन
5. नई शिक्षा नीति 2020– भारत सरकार,शिक्षा मंत्रालय।
6. इंटरनेट।

Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)